Dr. Vandana Suman H. D. Jain College, Ara
Associate professor, Deptt of Philosophy
M.A Sem - I Philosophy CC - 03
" Greek and Medieval Philosophy "

SOCRATIC METHOD
(सुकरात की दार्शनिक पद्धति)

APPOINTMENTS PRIORITY

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में सुकरात को एक विलक्षण व्यक्तित्व का दार्शनिक माना जाता है जिन्होंने अपने दार्शनिक विचार से सम्पूर्ण पाश्चात्य दर्शन को प्रभावित किया है। सही अर्थ में पाश्चात्य दर्शन का प्रारम्भ सुकरात के दार्शनिक विचार से ही होता है। क्योंकि आजकल उनका लिखा हुआ कोई भी नहीं मिलता है। फलस्वरूप उनके दार्शनिक विचार के लिए हमें विशेष रूप से उनके सम्बन्ध में लिखे गये नाटकों पर ही निर्भर करना पड़ता है।

सुकरात को किसी दार्शनिक सम्प्रदाय का प्रवर्तक नहीं माना जा सकता है क्योंकि उन्होंने किसी सम्प्रदाय की स्थापना नहीं की है बल्कि उनकी महत्ता दार्शनिक विधि Philosophical Method के प्रवर्तक के रूप में है। उनका उद्देश्य था कि एक ऐसे दार्शनिक विधि Philosophical Method की स्थापना करना जिससे सत्यता का ज्ञान प्राप्त किया जा सके। उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि मनुष्य के जीवन में सत्य और सद्गुण (Truth and Virtue) का महत्वपूर्ण स्थान है। एक मनुष्य सही अर्थ में मनुष्य कहलाने का अधिकारी तभी होता है जब वह सत्य के प्रति निष्ठावान है और जीवन में सद्गुण को अपनाये। अतः उन्होंने एक ऐसे दार्शनिक पद्धति की स्थापना की जिससे सत्यता का ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

सुकरात की दार्शनिक पद्धति मौलिक रूप से वार्तालाप की पद्धति (Conversational) है। उनकी आदत थी कि प्रत्येक दिन वे Athens नगर के बाजारों में जाते थे और वहाँ भी लोगों के साथ जीवन और मृत्यु जैसे मान्यताओं

पर वार्तालाप करते थे। वार्तालाप के दौरान कभी भी सुकरात ने यह नहीं व्यक्त किया कि जिस विषय पर वार्तालाप किया जा रहा है उसका सही ज्ञान उन्हें है बल्कि वार्तालाप के दौरान यह स्वयं भाग लेते थे और वार्तालाप में भाग लेनेवाले अन्य व्यक्तियों को अधिक बोलने का अवसर देते थे। वे हमेशा यह दिखलाते थे कि जिस विषय पर वार्तालाप किया जा रहा है उसका ज्ञान अन्य लोगों को अधिक उन्हें कम है। लेकिन किसी भी विषय के प्रति अज्ञानता प्रकट करने के बावजूद भी वार्तालाप में भाग लेने लोग यह जान लेते थे कि जिस विषय पर सुकरात वार्तालाप कर रहे हैं उसका समुचित ज्ञान सिर्फ उन्हें ही है। अतः एक बार एक श्रोता ने इनको यह शिकायत की थी कि आप साधारणतः वैसा ही प्रश्न हमलोगों से पूछते हैं जिनका उत्तर आप स्वयं भली भाँति जानते हैं। सुकरात की वार्तालाप की पद्धति मुख्य रूप से प्रश्नोत्तर की पद्धति है। वार्तालाप के दौरान सुकरात वार्तालाप में भाग लेनेवालों से दर्शन के संबंध में कुछ प्रश्न करते हैं और वार्तालाप में भाग लेनेवाले इस प्रश्न का उत्तर जिस रूप में देते हैं उसकी परीक्षा दैनिक जीवन के उदाहरण के द्वारा की जाती है और उस उत्तर को परिवर्तित तथा परिवर्धित करके सत्यता की स्थापना की जाती है। इस प्रकार किसी भी सत्यता की स्थापना के लिए आगमनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। आगमनात्मक पद्धति का संबंध दैनिक जीवन के अनुभवों से होता है। दैनिक जीवन के अनुभवों को लेकर एक सामान्य नियम की स्थापना की जाती है और फिर उस नियम के आधार

पर केवल आगमन निगमन निकाले जाते हैं और इन उदाहरणों के द्वारा इस निगम की परीक्षा होती है। जिससे भी निगम की परिभाषा दी जाती है और इस परिभाषा की परीक्षा विशेष उदाहरणों के द्वारा होती है। इस प्रकार उनकी यह पद्धति आगमनात्मक तथा निगमनात्मक दोनों है। जैसे — जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि राम एक व्यक्ति अच्छा नागरिक है तो यह कहना तब तक उचित नहीं होगा जब तक हम अच्छे नागरिक की की परिभाषा को सही जान लें। यही कारण है कि सुकरात भी दार्शनिक विषय के लिए सबसे पहले व्यावहारिक जीवन के अनुभवों के आधार पर उसकी परिभाषा तैयार करते हैं और फिर उस परिभाषा को विशेष उदाहरण पर लागू करके उसकी परीक्षा करते हैं। सुकरात के दार्शनिक पद्धति की अनेक विशेषताएँ हैं:—

1. The Socratic Method is sceptical: सुकरात की दार्शनिक पद्धति संदेहवादी है क्योंकि सुकरात ज्ञान विषय पर वार्तालाप करते हैं उसके प्रति सबसे पहले संदेहवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं। यद्यपि उनसे पहले यूनान में Sophist ने भी संदेहवादी पद्धति को अपनाया था लेकिन जहाँ सोफिस्ट का संदेहवाद अंतिम (final) है वहीं इनका सन्देहवाद आरंभिक (initial) है।

2. The Socratic Method is conversational: सुकरात की दार्शनिक पद्धति वार्तालाप की पद्धति है क्योंकि सत्यता की स्थापना के लिए उन्होंने वार्तालाप को ही उपयुक्त साधन के रूप में स्वीकार किया है। उनके जीवन के इतिहास को देखने से यह स्प

हो जाता है कि किस प्रकार से यूनान (Athens) के बाजारों में जाकर वहाँ लोगों के साथ गूढ़ दार्शनिक विषयों पर वार्तालाप करके सत्यता की स्थापना किया करते थे।

3. The Socratic Method is Conceptual or definitional :— सुकरात की दार्शनिक पद्धति धारणात्मक या परिभाषात्मक है क्योंकि उनका विश्वास था कि किसी भी समुचित परिभाषा के द्वारा किसी विषय का सही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

4. The Socratic Method is empirical or Inductive — सुकरात की दार्शनिक पद्धति अनुभवात्मक या आगमनात्मक है क्योंकि किसी भी नियम की स्थापना सुकरात दैनिक जीवन के उदाहरणों के आधार पर करते हैं। कुछ विशेष उदाहरणों का अनुभव या निरीक्षण किया जाता है और उसके आधार पर किसी सामान्य नियम की स्थापना की जाती है।

5. The Socratic method is deductive :— सुकरात की दार्शनिक पद्धति निगमनात्मक भी है क्योंकि किसी भी नियम की स्थापना के बाद वे उस नियम की परीक्षा विशेष उदाहरणों के द्वारा करते हैं। इस प्रकार सामान्य से विशेष की ओर जाना ही निगमनात्मक पद्धति है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सुकरात की दार्शनिक पद्धति सत्यता की स्थापना के लिए एक विलक्षण पद्धति है चूँकि उन्होंने अपनी पद्धति को मुख्यरूप से वार्तालाप पर आश्रित करने का प्रयास किया है। इन वार्तालाप में भाग लेनेवाले